प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

हमें समय का उपयोग बुद्धिमानी से करना चाहिए, और याद रखना चाहिए कि कोई भी काम करने का कोई गलत समय नहीं होता।
- नेल्सन मंडेला

दिवंगत द.अफ्रीकी राष्ट्रपति

संदेसरा बंधुओं को भारत प्रत्यर्पित कर उनके अपराध की सजा तो देनी ही चाहिए, आर्थिक अपराध करने वाले भविष्य में देश से भाग न सकें, इस पर भी नजर रखने की जरूरत है।

भगोड़ों के विरुद्ध

गुजरात की फार्मास्यूटिकल कंपनी स्टर्लिंग बायोटेक के भगोड़े प्रमोटरों के खिलाफ कार्रवाई बेशक पहले ही शुरू हो चुकी हो, पर प्रवर्तन निदेशालय का यह खुलासा बेहद चौंकाने वाला है कि संदेसरा बंधुओं का घोटाला नीरव मोदी के घोटाले से भी बड़ा है। एक के बाद एक कॉरपोरेट कंपनी को जिस तरह अनाप-शनाप कर्ज बांटे गए, वही इस मामले में हमारी व्यवस्था की अपारदर्शिता का नमूना था। रिजर्व बैंक द्वारा इस मामले में सख्ती बरतने की बात कहने, और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा डिफॉल्टरों के नाम बताने का निर्देश देने के बावजूद धरातल पर अमल नहीं हुआ। तिस पर एक के बाद एक डिफॉल्टर चोरी-छिपे जिस तरह देश से भाग गए, वह तो हमारी और भी बड़ी विफलता का सूचक है। खुद प्रवर्तन निदेशालय का आंकड़ा है कि हाल के वर्षों में विजय माल्या और नीरव मोदी समेत कुल 36 कारोबारी देश से भाग चुके हैं, जो हमारी दोहरी नाकामी का दयनीय उदाहरण है। संदेसरा बंधुओं की ही बात करें, तो उन्होंने भारत और विदेशों में तीन सौ से अधिक फर्जी कंपनियां बनाईं, जिनका संचालन फर्जी निदेशकों के जरिये किया जाता था और फर्जी खरीद-फरोख्त दिखाकर रकम बाहर भेजी जाती थी। संदेसरा बंधुओं की विदेशी कंपनियों ने भारतीय बैंकों की विदेशी शाखाओं से 9,000 करोड़ का कर्ज लिया, जो बाद में एनपीए में बदल गया, यानी वह पैसा बैंकों को नहीं लौटाया गया। प्रमोटरों ने बैंक से लिए गए कर्ज का न केवल व्यक्तिगत इस्तेमाल किया, बल्कि अपने दूसरे धंधों में भी वे पैसे लगाए। विभिन्न कारणों से लंबे समय से देश की अर्थव्यवस्था गतिरोध की स्थिति में है। ऐसे में हजारों करोड़ रुपयों के बैंक कर्ज की वापसी न होना अर्थव्यवस्था को बहुत बड़ा नुकसान है। ओसाका में हुई जी-20 की बैठक में आर्थिक भगोड़े के खिलाफ वैश्विक कार्रवाई के भारत के प्रस्ताव को तरजीह दी गई है। यह भी तथ्य है कि अल्बानिया में छिपे संदेसरा बंधुओं को वापस लाने के लिए हमारी प्रवर्तन एजेंसियां अल्बानिया सरकार तथा इंटरपोल के संपर्क में हैं। लेकिन विजय माल्या, नीरव मोदी और मेहुल चौकसी जैसों के अनुभव से साफ है कि आर्थिक अपराध कर विदेश भाग जाने वालों का प्रत्यर्पण उतना आसान नहीं है, और इसमें समय लगता है। लिहाजा आर्थिक अपराधियों के मामलों में जांच और प्रवर्तन एजेंसियों को सजग रहने की भी जरूरत है।

जी-20 में राष्ट्रीय हित

ओसाका में रूसी एस-400 मिसाइल पर अमेरिका से चर्चा भले न हो सकी, पर एस जयशंकर ने पोम्पियो को पहले ही बता दिया था कि भारत अपने राष्ट्रीय हित में फैसले लेगा।

मनोज जोशी

जी-20 का गठन 1999 में अंतरराष्ट्रीय वित्तीय स्थिरता के उद्देश्य से विकसित एवं विकासशील देशों के एक मंच के रूप में किया गया था। 1997 के गंभीर एशियाई संकट की पृष्ठभूमि में, जिसने पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया को ज्यादा प्रभावित किया और जिसके विश्वव्यापी बनने का खतरा पैदा हो गया था, इसका गठन हुआ। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद वैश्विक समुदाय ने अपने एजेंडे का विस्तार करने और इसे सरकार और राज्यों के प्रमुखों का एक शिखर सम्मेलन बनाने का फैसला किया। इसमें 19 देशों के साथ-साथ यूरोपीय संघ भी शामिल है, जिनकी अर्थव्यवस्था की वैश्विक जीडीपी में 90 फीसदी और व्यापार में 80 फीसदी की हिस्सेदारी है।

इस वर्ष जी-20 का शिखर सम्मेलन जापान के ओसाका में हुआ, जिसका प्रमुख मुद्दा बढ़ते संरक्षणवाद के मद्देनजर विश्व व्यापार व्यवस्था को ध्वस्त होने से बचाना था। लेकिन जिन अन्य वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की गई है, उनमें जलवायु परिवर्तन पर कार्रवाई और संशोधित डिजिटल अर्थव्यवस्था के मद्देनजर वैश्विक व्यापार नियमों को संशोधित और अद्यतन करने की आवश्यकता भी शामिल है। हालांकि इनमें से कई मुद्दे पहले से जारी वार्ताओं का हिस्सा हैं। इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं कि अधिकांश कार्रवाई द्विपक्षीय और कभी-कभी त्रिपक्षीय वार्ताओं पर केंद्रित हैं, जो विश्व नेताओं द्वारा की जाती हैं। निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण द्विपक्षीय वार्ता चीन और अमेरिका के बीच हुई। उस बैठक के, जिसे स्वयं अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने उम्मीदों से बेहतर बताया, निहितार्थ आने वाले महीनों में वैश्विक आर्थिक विकास में दिखेंगे। उस बैठक में अमेरिका 300 अरब डॉलर के चीनी सामान पर और शुल्क न लगाने पर सहमत हो गया है और उनके बीच आर्थिक और व्यापार वार्ता फिर से शुरू करने पर भी समझौता हुआ है, जिसे कुछ महीने पहले बंद कर दिया गया था, जब अमेरिका ने चीन पर अपनी प्रतिबद्धताओं से मुकरने का आरोप लगाया था। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण अमेरिका का वह फैसला है, जिसके तहत उसने अपनी कंपनियों को हुवावे को अपने उत्पाद बेचने की अनुमति दी है। इस कंपनी को कुछ महीने पहले अमेरिका ने प्रतिबंधित कर दिया था। हुवावे 5जी नेटवर्क का वैश्विक अगुआ है और विगत मई में अमेरिका ने राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर इस कंपनी से व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया था।

भारतीय दृष्टिकोण से प्रधानमंत्री मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के बीच मुलाकात पर सबकी नजर थी, क्योंकि नवंबर, 2017 के पश्चात और मोदी के फिर से प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद दोनों नेताओं के बीच यह पहली बैठक थी। विदेश सचिव विजय गोखले के मुताबिक, दोनों नेताओं ने ईरान, 5जी, व्यापार और रक्षा संबंध-यानी कुल चार मुद्दों पर बातचीत की।

विदेश मंत्री एस जयशंकर और उनके अमेरिकी समकक्ष माइक पोम्पियो के बीच पहले हुई बैठक में ही भारत ने स्पष्ट कर दिया था कि पश्चिम एशिया में शांति और स्थिरता भारत के लिए महत्वपूर्ण है। अमेरिकी दबाव पर भारत ने भले ही ईरान से अपने तेल आयात को शून्य पर ला दिया, लेकिन वह उस क्षेत्र की स्थिति से सहज महसूस नहीं कर रहा, जिसने उसकी ऊर्जा सुरक्षा पर असर डाला है।

यह स्पष्ट नहीं है कि वास्तव में 5जी नेटवर्क के आयात पर क्या चर्चा हुई। न तो भारत और न ही अमेरिका के पास वह तकनीक है, जो चीन की हुवावे, दक्षिण कोरिया की सैमसंग, स्वीडन की इरिक्शन और फिनलैंड की नोकिया के पास है। यह सुझाव, कि इस तकनीक को विकसित करने के लिए भारत और अमेरिका सहयोग करेंगे, थोड़ा अजीब लगता है, क्योंकि इसे विकसित करने में वर्षों लगेंगे और यह फिर से पहिये का आविष्कार करने जैसा होगा। दरअसल अमेरिका चाहता है कि भारत हुवावे का बहिष्कार करे। यह एक प्रमुख मुद्दा है, क्योंकि चीन संभवतः इस क्षेत्र में ज्यादा उन्नत है और उसकी तकनीक उस देश के लिए सबसे सस्ती है, जो दुनिया में सबसे सस्ती इंटरनेट सेवा देने का दावा करती है। लेकिन ट्रंप ने हुवावे को अमेरिका के साथ व्यापार करने की अनुमति देने पर सहमति व्यक्त की, ऐसे में सवाल है कि इस मुद्दे पर अमेरिका कितना गंभीर है।

गोखले के मुताबिक, समय की कमी के कारण रूसी एस-400 मिसाइल के अधिग्रहण पर चर्चा नहीं हो सकी। इस मामले में भी भारतीय दृष्टिकोण को एस जयशंकर ने पोम्पियो के साथ अपनी बैठक में स्पष्ट कर दिया था। एस जयशंकर ने अपने समकक्ष को बता दिया था कि भारत अपने राष्ट्रीय हित में काम करेगा और एस-400 पर नई दिल्ली के फैसले में कोई बदलाव नहीं होगा।

ट्रंप द्वारा सार्वजनिक रूप से 29 अमेरिकी वस्तुओं पर भारत द्वारा लगाए गए शुल्क को वापस लेने से संबंधित ट्वीट करने पर व्यापार एक प्रमुख मुद्दा बनकर उभरा। दरअसल भारत ने एक साल देरी से शुल्क लगाया। उन्हें मूल रूप से 2018 की शुरुआत में भारतीय स्टील और एल्यूमीनियम निर्यात पर शुल्क लगाए जाने के खिलाफ बदले में लगाया जाना था। अमेरिका द्वारा तरजीही राष्ट्र का दर्जा वापस लेने के बाद भारत ने बदले में शुल्क बढ़ाने का फैसला लिया। लेकिन लगता नहीं कि ओसाका की बैठक में इस पर बहुत चर्चा हुई। उसका कारण यह है कि पिछले सितंबर में दोनों देशों के विदेश और रक्षा मंत्रियों के बीच 2+2 वार्ता हो चुकी है, जिसमें व्यापार से संबंधित ऐसी कोई चर्चा नहीं हुई। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि ओसाका में यह निर्णय लिया गया कि दोनों देशों के बीच वाणिज्य और उद्योग मंत्री और उनके अमेरिकी समकक्षों के स्तर पर चर्चा की जानी चाहिए। ओसाका में प्रधानमंत्री मोदी ने सावधानी पूर्वक भारत की विदेश नीति को संतुलित किया और तुर्की व जापान जैसे देशों के साथ भी द्विपक्षीय वार्ता की, तो चीन एवं रूस के साथ त्रिपक्षीय वार्ता की और ब्रिक्स के सहयोगी देशों के साथ शिखर सम्मेलन किया। जी-20 की मेजबानी करने वाले जापान के प्रधानमंत्री शिंजो अबे के साथ उनकी एक महत्वपूर्ण बैठक हुई और ट्रंप-मोदी की बैठक से ठीक पहले इन दोनों देशों की अमेरिका के साथ त्रिपक्षीय वार्ता भी हुई।

-लेखक ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन के प्रतिष्ठित फेलो हैं।

अंतर्ध्वनि

>> पाब्लो नेरुदा

बचपन से ही मुझे चिड़ियों, सीपियों और जंगलों से प्रेम रहा है

अपने बचपन से ही मुझे चिड़ियों, सीपियों, जंगलों और पेड़-पौधों से प्रेम रहा है। समुद्री सीपियों की खोज में मैं कई जगह गया और उनका एक बड़ा संग्रह मेरे पास है। मैंने 'पक्षियों की कला' नाम से एक पुस्तक लिखी है। मैंने 'बेस्तिअरी', 'सी-क्वेक' और 'रोज ऑफ एवालरियो' भी लिखी हैं, जो कि फूलों, शाखाओं और वानस्पतिक विकास के संबंध में है। मैं प्रकृति से अलग होकर रह नहीं सकता। होटलों में कुछ दिन गुजार सकता हूं और एकाध घंटे के लिए हवाई जहाज में रहना भी अच्छा लगता है, लेकिन प्रसन्नता मुझे जंगलों में, रेत पर या नाव खेते हुए ही मिलती है, जहां कहीं आग, धरती, पानी और हवा से सीधा संपर्क हो सके। मेरे लिए समुद्र, मछली और चिड़ियों का एक भौतिक अस्तित्व है। मैं उनका उल्लेख उसी तरह करता हूं, जैसे धूप का करता हूं। जो दौर मेरी जिंदगी में आए हैं, वे मेरी कविता में भी आए हैं: एकाकी बचपन और दूरदराज सबसे कटे हुए देशों में बीती किशोरावस्था से मैंने एक विराट मानव समूह में शरीक होने तक की यात्रा की है। इससे मुझे पूर्णता हासिल हुई। मैंने अपनी जिंदगी जनता के कल्याण के लिए समर्पित की है और मेरे घर में जो कुछ है–यानी किताबें–वह मेरे अपने अस्तित्व का नतीजा है। जिस तरह के उलाहने मुझे मिलते हैं, वैसे उन लेखकों को नहीं मिलते, अमीरी जिनका जन्मसिद्ध अधिकार है। कला की तरह जिंदगी में भी आप हरेक को खुश नहीं रख सकते, और यह एक ऐसी स्थिति है, जो हमेशा बनी रहती है। आपको हमेशा चुंबन और चांटे मिल रहे हैं, दुलार और दुलत्तियां मिल रही हैं, और यही एक कवि की जिंदगी है। जिस बात से मुझे परेशानी होती है, वह है: आपकी कविता या जिंदगी की घटनाओं की तोड़-मरोड़कर की गई व्याख्या।

-चिली के नोबेलजयी कवि

मंजिलें और भी हैं

>> अयप्पा मसागी

जल संरक्षण के साथ बंजर जमीन पर लाया हरियाली

मेरा जन्म उत्तरी कर्नाटक के गडग जिले में एक गरीब किसान परिवार में हुआ। बचपन में अक्सर मैं देखता था कि मेरे पिता खेतों में पानी की कमी से जूझते रहते थे। तभी से मेरा सपना था कि गांवों के विकास के लिए साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करूं। मैंने पिताजी की अनिच्छा के बावजूद मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। पढ़ाई पूरी कराने के लिए मेरी मां को अपने गहने तक बेचने पड़े। इंजीनियरिंग की परीक्षा पास करते ही मुझे बंगलूरू के भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड (बीईएमएल) में नौकरी मिल गई। वहां कुछ दिन काम करने के बाद मैं लार्सन ऐंड टूब्रो (एलएंडटी) में आ गया। लेकिन कुछ साल बाद मैंने नौकरी छोड़ दी और पूरी तरह से जल संरक्षण की मुहिम में लग गया।

अपने पैतृक गांव गडग में छह एकड़ जमीन खरीद कर मैंने उसे ही 'रिसर्च ऐंड डेवलपमेंट लैब' बना दिया। उसी दौरान कर्नाटक में सूखा पड़ गया। उसके बाद आई बाढ़ से मेरी सारी फसल खराब हो गई। बाढ़ में फंसने के कारण एक बार तो मुझे पेड़ पर बैठकर रात गुजारनी पड़ी। उस आपदा के दौरान ही मेरे मन में विचार आया कि क्यों न बाढ़ के पानी को जमा करने के उपायों पर कुछ काम किया जाए। इस विचार को जमीन पर उतारने के लिए मैंने अन्ना हजारे और जलपुरुष राजेंद्र सिंह से मुलाकात की। इसके बाद धीरे-धीरे मैंने बोरवेल रिचार्ज की अपनी तकनीक विकसित कर ली। मुझे लगता है कि धरती सबसे बड़ी फिल्टर है। अपने मॉडल के तहत मैं पहले एक बड़े गड्ढे में बड़े पत्थर, बजरी, रेत और कीचड़ की मदद से एक ढांचा बना देता हूं। जब पानी गिरता है तो यह पानी बजरी और रेत से होता हुआ नीचे तक जाता है। मैं प्रति एकड़ आठ ऐसी संरचना बनाता हूं। इसमें बारिश का पानी जमा होने लगता है। मैं पानी को इकट्ठा करता हूं और उसे जमीन में उतार देता हूं। पानी के गड्ढे में जमा होने के बाद वह रेत और बोल्डर से छनते हुए नीचे चला जाता है जिससे, ग्राउंड वाटर लेवल बढ़ने लगता है। जब जमीन में पूरी तरह से पानी चला जाता है, तो उस गड्ढे में बुलबुले नजर आने लगते हैं। हमेशा मेरी कोशिश यह रहती है कि जो पानी जमा हो रहा है, वह गर्मी के कारण भाप बनकर उड़ न जाए।

मेरे मॉडल से अब तक पांच सौ झीलें और एक लाख बोरवेल रिचार्ज हो चुके हैं।

वर्ष 2014 में मैंने आंध्र प्रदेश के सूखा प्रभावित चिलमाचुर में 82 एकड़ बंजर जमीन खरीदी और उसे 37 कंपार्टमेंट में बांटकर पानी से लबालब कर डाला, साथ ही, पेड़ लगाकर उसे हरा-भरा कर दिया। मैं 'वॉटर लिटरेसी फाउंडेशन' भी चलाता हूं, जो *वॉटर वॉरियर्स* तैयार कराता है। मैं स्कूलों में जाकर बच्चों को पानी के महत्व और उसे बचाने के उपायों के बारे में बताता हूं। मैं लैपटॉप और सीडी लेकर कर्नाटक के गांव-गांव में जाता हूं। इस दौरान किसानों को पानी के प्रति सावधानी बरतने से संबंधित एक बुकलेट भी देता हूं। अब तक तकरीबन 100 से ज्यादा इंटर्न्स मेरे मॉडल की ट्रेनिंग ले चुके हैं। अब तो जर्मनी, जापान और अमेरिका के लोग भी मेरे पास पानी बचाने के उपाय सीखने आ रहे हैं। इस तरह मेरे मॉडल से पांच सौ झीलें और एक लाख बोरवेल रिचार्ज हो चुके हैं, जिससे लगभग बीस लाख से अधिक लोगों की पानी पर आधारित निर्भरता पूरी हुई है। इसके लिए मुझे लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में जगह भी मिली है। पानी को लेकर इतना काम करने के बाद अब सरकार भी मेरे मॉडल की तरफ ध्यान देने लगी है और उसे अन्य जगहों पर लागू करना चाहती है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

जल संकट से जूझता देश

जल संकट के समाधान के लिए हम इस्राइल से सीख सकते हैं। वहां किसी को पानी मुफ्त में नहीं दिया जाता। सो जल शक्ति मंत्रालय से उम्मीद है कि वह उन वीआईपी लोगों से सख्ती से पेश आएगा, जो पानी मुफ्त में लेते हैं।

तवलीन सिंह

इस वर्ष बरसात ने इतनी देर कर दी कि गांव के तालाब में पानी बिल्कुल नहीं है। महाराष्ट्र के इस गांव को मैं वर्षों से जानती हूं और पहली बार ऐसा होते देखा है। कोई बीस वर्ष पूर्व जब पहली बार यहां आना हुआ, तो यह मछुआरों का गरीब-सा गांव था। आज गांव में सबके पास सेल फोन आ गए हैं, हर घर में टीवी है। लेकिन शायद ही कोई घर होगा, जिसमें नलों में पानी आता हो। पानी टैंकरों से आता है। टैंकर न आए, तो पानी की समस्या गंभीर हो जाती है। सो जब टीवी पर प्रधानमंत्री के भाषण सुने संसद के दोनों सदनों में और घोषणा सुनी जल शक्ति मंत्रालय की, तो मुझे निजी तौर पर खुशी हुई। इसलिए कि मैंने अपनी आंखों से स्वच्छ भारत योजना की सफलता इस गांव में देखी है। इस योजना के शुरू होने से पहले इस गांव के तकरीबन सारे लोग खुले में शौच करते थे। अब हर घर में शौचालय है, और जिस समुद्र तट पर गांववासी खुले में शौच करते थे, वहां आज पर्यटकों के लिए हर तरह की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

इसलिए 'मोदी है तो मुमकिन है' वाले नारे में मुझे विश्वास है। विश्वास इस जल शक्ति मंत्रालय पर भी है, क्योंकि जिस व्यक्ति को स्वयं प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत की सफलता का श्रेय देते हैं, उसी व्यक्ति को प्रधानमंत्री ने हर घर में नल से पानी उपलब्ध करवाने का श्रेय दिया है। परमेश्वर अय्यर अन्य सरकारी अधिकारियों से इसलिए अलग हैं, क्योंकि जब प्रधानमंत्री ने लाल किले से 2014 के भाषण में स्वच्छ भारत योजना का एलान किया था, अय्यर साहब तब वियतनाम में विश्व बैंक में काम कर रहे थे। वह नौकरी छोड़कर वापस आए, क्योंकि देशभक्त तो वह हैं ही, स्वच्छता या सैनिटेशन के विशेषज्ञ भी हैं। स्वच्छ भारत योजना की सफलता में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। दिल्ली में कुछ दिन पहले जब उनसे मुलाकात हुई थी, तो उनकी नियुक्ति जल शक्ति मंत्रालय में नई-नई हुई थी। बातचीत शुरू होने से पहले उन्होंने स्वीकार किया कि देश में पानी की समस्या इतनी बड़ी है कि इसका समाधान ढूंढना आसान नहीं होगा।

वर्तमान स्थिति यह है कि ग्रामीण भारत के लगभग 80 प्रतिशत घरों में नलों के जरिये पानी नहीं आता। उत्तर प्रदेश, बिहार, असम और ओडिशा की स्थिति इतनी बुरी है कि पांच प्रतिशत से भी कम ग्रामीण घरों में पानी पहुंचा है। शहरों का इतना बुरा हाल है कि चेन्नई में इस मौसम में पानी सिर्फ वीआईपी घरों में मिल रहा है। आम आदमी आधी रात टैंकरों से दो बाल्टी पानी लेने के लिए गुजार देते हैं। मुंबई में भी हाल अलग नहीं है। वहां वीआईपी घरों में पानी की कोई किल्लत नहीं है, लेकिन आम आदमी बूंद-बूंद पानी बचाने पर मजबूर है। ऊपर से पिछले सप्ताह आरटीआई से जानकारी मिली कि मुख्यमंत्री और कई अन्य मंत्रियों ने वर्षों से अपने बिल तक नहीं दिए हैं।

अय्यर साहब से जब मेरी मुलाकात हुई, तो उन्होंने कहा कि पानी की समस्याओं का हल ढूंढने के लिए हम इस्राइल से बहुत कुछ सीख सकते हैं। वहां किसी को पानी मुफ्त नहीं दिया जाता। सो जल शक्ति मंत्रालय जब अपना काम शुरू करेगा, तो उम्मीद है कि उन वीआपीई लोगों से सख्ती से पेश आएगा, जो पानी मुफ्त में लेते हैं या जिनकी मुफ्तखोरी का पैसा हम भरते हैं। शर्म की बात है कि जीवन की इस सबसे बुनियादी चीज़ के लिए देश का आम आदमी स्वतंत्रता के सत्तर साल के बाद भी तरस रहा है। जल शक्ति मंत्रालय को युद्ध स्तर पर काम करना होगा। तभी इस समस्या का समाधान संभव होगा।

हरियाली और रास्ता

रोमा, विमान यात्रा और महिला

एक ऐसी महिला की कहानी, जो अपने स्थूल शरीर से परेशान नहीं, बल्कि खुश थी।

रोमा हर हफ्ते की तरह मुंबई से वापस अपने घर दिल्ली लौट रही थी। वह एक जिम ट्रेनर थी। वह विमान में बैठी ही थी कि उसने देखा, एक बहुत मोटी-सी औरत उसकी तरफ चली आ रही है। देखते ही देखते वह रोमा के पास पहुंची और उसकी बगल वाली सीट पर उसे बैठने का इशारा किया। रोमा उठकर खड़ी हो गई और उसे बैठने के लिए जगह दी। उस औरत ने बड़ी मुश्किल से अपने बड़े से शरीर को उस छोटी-सी सीट में फिट किया। फिर वह रोमा से बात करने लगी। रोमा हालांकि बात नहीं करना चाहती थी, लेकिन उसने फिर भी बात की। रोमा ने पूछा, क्या आपने कभी वजन कम करने के बारे में सोचा? वह औरत बोली, बिल्कुल नहीं। मुझे वजन कम करने की क्या जरूरत है? मुझे यह शरीर सिर्फ इसलिए मिला है, ताकि मैं बाकी लोगों से ज्यादा खुशी इसमें समा सकूं। वजन कम करके मैं क्यों अपनी खुशियां कम करूं? मैं और लोगों के मुकाबले ज्यादा चलती हूं, ज्यादा खाती हूं, ज्यादा मुस्कराती हूं और ज्यादा मस्ती करती हूं। मेरे जितने दोस्त हैं, आम तौर पर लोगों के पास उतने दोस्त नहीं होते। रोमा मजाक करते हुए बोली, तब तो आपके कई बॉयफ्रेंड भी होंगे। वह औरत बोली, इसमें कोई शक नहीं। वे सारे लड़के, जो अपनी प्रेमिका को खुश करना चाहते हैं, अक्सर मुझे एक अच्छा दोस्त समझ कर मेरी सलाह लेते हैं। कभी-कभी तो लगता है कि मैं काउंसिलर ही बन जाऊं। मेरे पीछे वैसे लड़के कभी नहीं आते, जो सिर्फ बाहरी नैन-नक्श के दीवाने होते हैं। उस औरत की मजेदार बातें सुनकर रोमा और विमान में बैठे सभी लोग ठहाके लगाने लगे। रोमा ने पहली बार जिंदगी में कोई ऐसी औरत देखी थी, जो अपने भारी वजन से आजाद नहीं होना चाहती थी, क्योंकि वह शरीर से परेशान नहीं, मन से आजाद थी।

किसी को प्रभावित करने के लिए हमारा नजरिया ही काफी होता है।

खुली खिड़की

अरबपतियों की संख्या

दुनिया के विभिन्न देशों में अलग-अलग क्षेत्रों में सफलता हासिल कर चुके अरबपति मौजूद हैं। हाल की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि सबसे ज्यादा अरबपति अमेरिका में हैं।

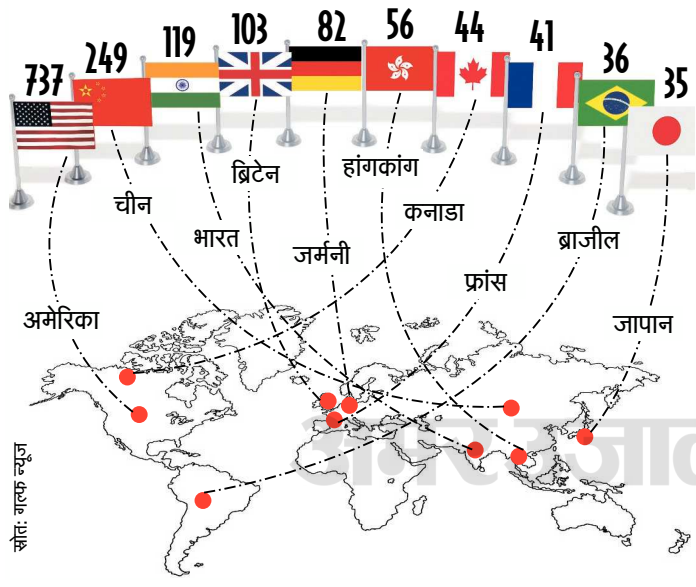

स्रोत: गल्फ न्यूज

संत की विरक्ति

सत्संग

संत पुरंदर भगवान के सच्चे भक्त थे। भगवान की भक्ति को सर्वोपरि मानकर वह अपना तमाम समय पूजा-अर्चना तथा गरीबों की सेवा में बिताते थे। विजयनगर के राजा कृष्णदेव ने संत पुरंदर के निर्लोभी होने की बात सुनी, तो हैरान रह गए। उन्होंने संत की परीक्षा लेने का निश्चय किया। संत को दी जाने वाली भिक्षा के चावल में हीरे व रत्न मिलाकर दिए जाने लगे। एक महीने तक भिक्षा के अन्न में छोटे-छोटे हीरे दिए जाते रहे।

महीने के अंत में राजा अपने मंत्री व्यासराम को साथ लेकर वेश बदल कर संत पुरंदर के घर जा पहुंचे। उन्होंने दरवाजे में घुसते ही संत की पत्नी की आवाज सुनी। वह कह रही थीं, आजकल आप किस गरीब के यहां से भिक्षा लाते हैं। वह चावलों में कंकड़ मिलाकर देता है। मैं बीनते-बीनते परेशान हो जाती हूं। राजा ने देखा कि कोठरी के एक कोने में उनके द्वारा दिए गए हीरों का ढेर लगा हुआ था। संत पुरंदर ने राजा को पहचान लिया। वह बोले- महाराज, मैं जानता था कि आप मेरी गरीबी को देखते हुए चुपचाप भिक्षा के चावलों में कुछ हीरे मिलाकर भेजते हैं। परंतु मुझ ब्राह्मण के लिए हीरे और कंकड़ में कोई अंतर नहीं है। इन हीरों को आप ले जाएं तथा गांवों में मीठे पानी के कुएं खुदवा दें। राजा तथा मंत्री, दोनों संत की विरक्ति के सामने नतमस्तक हो उठे।

-संकलित